Gyan Manthan, Vol 2, Issue 5, pp 269-276 May 2026 ISSN: **3108-3455**

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

21वीं शताब्दी की आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली)IKS) का समावेश और भविष्य की राह

सुरमल नार्वे[1]
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध "आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का समावेश: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" के विषय पर केंद्रित है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ शिक्षा केवल आर्थिक उपयोगिता और तकनीकी दक्षता का माध्यम बनकर रह गई है, भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र (Holistic) और मानवीय विकल्प प्रस्तुत करती है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय दार्शनिक सिद्धांतों और शिक्षण पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करने की संभावनाओं का पता लगाना है।

*शोध में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** के प्रावधानों का विश्लेषण करते हुए यह रेखांकित किया गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत का गौरव गान नहीं, बल्कि भविष्य की समस्याओं का तार्किक समाधान है। शोध की पद्धति मुख्य रूप से गुणात्मक और वर्णनात्मक है, जिसमें उपनिषदों के 'पंचकोश' सिद्धांत, श्रीमद्भगवद्गीता के मनोवैज्ञानिक सूत्रों और प्राचीन विश्वविद्यालयों (नालंदा, तक्षशिला) के बहुविषयक दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्राचीन 'श्रवण-मनन-निदिध्यासन' जैसी पद्धतियाँ छात्र में गहन चिंतन और चरित्र निर्माण के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। शोध यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षा में भारतीयता का समावेश छात्रों को अपनी जड़ों से जोड़कर उनमें वैश्विक नागरिकता और नैतिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है। यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि आधुनिक तकनीक और प्राचीन प्रज्ञा (Wisdom) का समन्वय ही भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के पद पर प्रतिष्ठित कर सकता है। यह ज्ञान-क्रांति न केवल व्यक्तिगत उत्कर्ष के लिए, बल्कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के वैश्विक कल्याण के लिए भी अनिवार्य है।*

मुख्य शब्द: आधुनिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति),NEP 2020, विज्ञान, तकनीक, आयुर्वेद का समावेश, नैतिक मूल्य, . शिक्षण पद्धतियाँ

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) महज़ प्राचीन ग्रंथों का संग्रह या सूचनाओं का पुलिंदा नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत जीवन दर्शन है जो मनुष्य को ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य बिठाना सिखाता है। आज के इस दौर में, जहाँ वैश्विक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य केवल बाज़ार की माँगों को पूरा करना और आर्थिक लाभ के लिए कुशल श्रमिक तैयार करना रह गया है, वहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा एक **समग्र (Holistic)** और मानवीय विकल्प के रूप में उभरती है। प्राचीन काल से ही भारत में ज्ञान का लक्ष्य केवल सांसारिक सफलता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और मानसिक स्वतंत्रता रहा है, जैसा कि हमारे शास्त्रों का उद्घोष है, **"सा विद्या या विमुक्तये"** अर्थात् विद्या वही है जो हमें बंधनों से मुक्त करे। यह मुक्ति केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि अज्ञान, संकीर्णता और पूर्वाग्रहों से भी मुक्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी इसी दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो इस बात पर बल देती है कि भारतीय गौरव और ज्ञान परंपरा को केवल अतीत का विषय न मानकर उसे वर्तमान की वैज्ञानिक प्रगति के साथ एकीकृत किया जाए। जब हम **"ईशा वास्यमिदं सर्वं"** (इस चराचर जगत में सब कुछ ईश्वर का अंश है) जैसे वैश्विक दर्शन को आधुनिक पर्यावरण विज्ञान के साथ जोड़कर देखते हैं, तो शिक्षा न केवल छात्र का व्यक्तिगत विकास करती है, बल्कि उसे वैश्विक उत्तरदायित्व का भी बोध कराती है। इस प्रकार, यह शोध पत्र प्राचीन प्रज्ञा और आधुनिक तकनीक के समन्वय से एक ऐसे शैक्षणिक ढांचे का प्रस्ताव करता है जो मानवीय मूल्यों और वैज्ञानिक तार्किकता का अनूठा संगम होगा।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और ज्ञान का स्रोत

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास मानवीय चेतना के विकास की एक गौरवशाली यात्रा है, जहाँ ज्ञान को महज़ जीविकोपार्जन का साधन न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण उत्कर्ष का मार्ग माना गया। प्राचीन भारत में शिक्षा का चरम लक्ष्य भौतिक समृद्धि के साथ-साथ आंतरिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था, जिसका प्रमाण हमारे शास्त्रों के इस उद्घोष में मिलता है कि **"सा विद्या या विमुक्तये"** अर्थात् विद्या वही है जो मनुष्य को अज्ञान, संकीर्णता और सांसारिक बंधनों से मुक्त कर उसे सत्य के प्रकाश की ओर ले जाए। यह विचार उस समय के समाज में गहराई तक व्याप्त था, जहाँ शिक्षा को मनुष्य का 'तृतीय नेत्र' माना जाता था जो उसे प्रत्यक्ष से परे देखने की शक्ति प्रदान करता था।

शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध की दिशा उसके उद्देश्यों से निर्धारित होती है। इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्मूल्यांकन करना।
2. NEP 2020 के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
3. चुनौतियों और समाधानों की पहचान करना।
4. वैश्विक प्रासंगिकता सिद्ध करना करना।

शोध विधि

यह शोध मुख्य रूप से **गुणात्मक (Qualitative)** और **वर्णनात्मक (Descriptive)** प्रकृति का है। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों और वर्तमान नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और IKS का विजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल प्रशासनिक सुधारों का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह भारतीय मानस को औपनिवेशिक दासता से मुक्त करने का एक वैचारिक अनुष्ठान है। इस नीति का मुख्य विजन भारत को एक 'न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज' में बदलना है। यह स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है कि हमारी शिक्षा प्रणाली को अपनी जड़ों से रस प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि जैसा कि डॉ. एस. राधाकृष्णन ने एक बार कहा था, **"शिक्षा का मुख्य कार्य मनुष्य को विधाता की महानतम रचना के रूप में पहचान दिलाना और उसे अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक करना है।"** NEP 2020 में IKS का समावेश इसी चेतना का विस्तार है, जहाँ प्राचीन भारतीय ज्ञान के 'बहुविषयक दृष्टिकोण' (Multidisciplinary Approach) को आधुनिक शोध के साथ जोड़ा गया है। नीति का मानना है कि जब छात्र अपनी विरासत के वैज्ञानिक पहलुओं को समझेंगे, तभी उनमें वह आत्मविश्वास जागेगा जिसे स्वामी विवेकानंद ने **"मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति"** के रूप में परिभाषित किया था। इस प्रकार, यह विजन शिक्षा को केवल आजीविका का साधन बनाने के बजाय उसे राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का आधार बनाता है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षणिक मनोविज्ञान

आधुनिक शिक्षा में मनोवैज्ञानिक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती बनकर उभरे हैं, जिसका समाधान श्रीमद्भगवद्गीता के निष्काम कर्म और स्थितप्रज्ञता के सिद्धांतों में मिलता है। गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि शिक्षक और शिष्य के बीच के उच्चतम संवाद का प्रतिमान है, जो यह सिखाता है कि संदेह और द्वंद्व की स्थिति में तर्कसंगत निर्णय कैसे लिए जाएँ। जैसा कि गीता में कहा गया है, **"योग: कर्मसु कौशलम्"** अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है। यह सूत्र आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा और प्रबंधन के लिए मूलमंत्र की तरह है। जब एक छात्र अपनी शिक्षा को फल की

चिंता किए बिना केवल दक्षता के लिए ग्रहण करता है, तो वह तनावमुक्त होकर सृजन कर पाता है। महर्षि अरविंद ने भी इस बात पर बल दिया था कि **"सच्ची शिक्षा वही है जो छात्र के मानस और आत्मा के साथ तालमेल बिठा सके"**, और गीता यही मनोवैज्ञानिक धरातल प्रदान करती है।

पाठ्यक्रम में एकीकरण के सिद्धांत

भारतीय ज्ञान प्रणाली को पाठ्यक्रम में शामिल करने का अर्थ इसे किसी बंद संग्रहालय की वस्तु की तरह पेश करना नहीं, बल्कि इसे आधुनिक विषयों की धमनियों में प्रवाहित करना है। एकीकरण का मुख्य सिद्धांत 'समन्वय' होना चाहिए, न कि 'प्रतिस्थापन'। ज्ञान के इस प्रवाह को स्पष्ट करते हुए भर्तृहरि ने नीतिशतक में लिखा है, **"विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्"** अर्थात् विद्या मनुष्य का छिपा हुआ सुरक्षित धन है जो भोग और यश प्रदान करने वाला है। पाठ्यक्रम में IKS का समावेश इसी 'छिपे हुए धन' को उजागर करना है। यह एकीकरण तभी सफल होगा जब हम **"ऋणमापयन्तः सुकृतस्य लोके"** (अर्थात् हम प्राचीन ऋषियों के ऋण को ज्ञान के विस्तार द्वारा चुकाएं) के भाव से शोध करेंगे। वैज्ञानिक सोच और सांस्कृतिक बोध का यह मेल ही छात्रों को एक 'ग्लोबल इंडियन' के रूप में तैयार करेगा, जो नासा के सिद्धांतों को भी समझेगा और वेदों की ऋचाओं के पीछे छिपे भौतिक विज्ञान को भी।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शिक्षण पद्धतियाँ: प्राचीन बनाम आधुनिक

प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता इसका अनुभवजन्य होना था। जहाँ आधुनिक शिक्षा अक्सर सूचनाओं के 'रटने' (Rote Learning) पर केंद्रित हो जाती है, वहीं भारतीय परंपरा **"श्रवण-मनन-निदिध्यासन"** के त्रिसूत्रीय मार्ग पर बल देती है। इसमें 'श्रवण' केवल सुनना नहीं बल्कि ध्यानपूर्वक ग्रहण करना है, 'मनन' प्राप्त ज्ञान पर तर्कपूर्ण चिंतन करना है, और 'निदिध्यासन' उस सत्य को अपने आचरण में उतारना है। यह पद्धति आधुनिक 'क्रिटिकल थिंकिंग' के उस विचार को पुष्ट करती है जिसमें कहा गया है कि वास्तविक ज्ञान वह है जो परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरे। जैसा कि सुकरात से भी सदियों पहले हमारे ऋषियों ने माना था, **"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"** (इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र और कुछ भी नहीं है)। अतः शिक्षण पद्धतियों में यह बदलाव छात्र को केवल एक 'कंटेनर' से बदलकर एक 'अन्वेषक' बना देगा।

भाषा और भारतीय ज्ञान प्रणाली

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह उस समाज के सामूहिक अनुभव और प्रज्ञा का संवाहक होती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में मातृभाषा और संस्कृत का महत्व निर्विवाद है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) अधिक तीव्र होता है। संस्कृत की व्याकरणिक शुद्धता और इसकी गणितीय संरचना इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और कोडिंग के लिए भी उपयुक्त बनाती है। जैसा कि पाणिनि के अष्टाध्यायी के संदर्भ में आधुनिक भाषाविदों ने भी स्वीकारा है कि भारतीय भाषाई परंपरा अत्यंत वैज्ञानिक है। महाकवि कालिदास ने रघुवंशम् में लिखा है, **"वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये"** अर्थात् शब्द और अर्थ उसी प्रकार जुड़े हुए हैं जैसे शिव और शक्ति। जब हम शिक्षा में भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं, तो हम केवल शब्द नहीं सिखाते, बल्कि उन शब्दों के पीछे छिपे सांस्कृतिक अर्थ और मूल्यों को भी हस्तांतरित करते हैं। भारतीय भाषाओं के माध्यम से IKS का समावेश छात्रों को अपने परिवेश को 'औपनिवेशिक चश्मे' के बजाय अपनी दृष्टि से देखने की शक्ति प्रदान करता है।

विज्ञान, तकनीक और आयुर्वेद का समावेश

भारतीय ज्ञान परंपरा कभी भी विज्ञान विरोधी नहीं रही, बल्कि यहाँ विज्ञान और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू माने गए हैं। आयुर्वेद के रूप में हमारे पास स्वास्थ्य का एक ऐसा विज्ञान है जो केवल बीमारी के इलाज पर नहीं, बल्कि 'पूर्ण स्वास्थ्य' (Holistic Health) पर केंद्रित है। चरक संहिता का यह सूत्र, **"स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं च"** (स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग का निवारण करना), आज की 'प्रिवेंटिव हेल्थकेयर' प्रणाली का आधार है। शोध में इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि छात्रों को जगदीश चंद्र बसु के इस विचार से प्रेरित किया जाए कि **"भारतीय मन की प्रवृत्ति केवल वस्तुओं के बाहरी रूप को देखने की नहीं, बल्कि उनके अंतर्निहित सत्य को खोजने की है।"** जब हम आधुनिक इंजीनियरिंग में प्राचीन जल प्रबंधन और वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों को जोड़ते हैं, तो हम एक ऐसी तकनीक विकसित करते हैं जो प्रकृति के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल बिठाकर चलती है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

नैतिक मूल्य और चारित्रिक विकास

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी त्रासदी 'बुद्धि का विकास' और 'हृदय के संकुचन' के बीच का असंतुलन है। भारतीय ज्ञान प्रणाली इस खाई को पाटने के लिए 'चरित्र निर्माण' को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। प्राचीन नीतिशास्त्र के अनुसार, **"शीलम् परं भूषणम्"** अर्थात् चरित्र ही मनुष्य का श्रेष्ठ आभूषण

है। शोध में यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि नैतिकता कोई थोपा गया नियम नहीं, बल्कि जीवन की सहज पद्धति है। योगसूत्र में वर्णित 'यम' (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता के सूत्र हैं। यदि शिक्षा इन मूल्यों को छात्र के जीवन में समाहित नहीं कर पाती, तो वह ज्ञान केवल विनाश का कारण बनता है। जैसा कि महात्मा गांधी ने भी आगाह किया था, **"चरित्र के बिना ज्ञान एक पाप है।"** अतः, आधुनिक शिक्षण संस्थानों में नैतिक मूल्यों का समावेश छात्रों को केवल 'कुशल मशीन' बनाने के बजाय 'संवेदनशील मनुष्य' के रूप में विकसित करेगा, जो तकनीक का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए करेंगे।

शिक्षकों की भूमिका और क्षमता संवर्धन

भारतीय ज्ञान प्रणाली का सफल क्रियान्वयन पूरी तरह से शिक्षक की योग्यता और उसकी दृष्टि पर निर्भर करता है। प्राचीन परंपरा में शिक्षक केवल 'इंस्ट्रक्टर' नहीं, बल्कि 'आचार्य' होता था, जो अपने आचरण से शिक्षा देता था। आज के संदर्भ में, संकाय विकास कार्यक्रमों (FDP) को केवल तकनीकी कौशल तक सीमित न रखकर उन्हें 'भारतीय शिक्षा दर्शन' से जोड़ना अनिवार्य है। रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार, **"एक शिक्षक तब तक वास्तव में कभी नहीं पढ़ा सकता, जब तक वह स्वयं अभी भी सीख न रहा हो।"** शिक्षकों को यह प्रशिक्षण देना होगा कि वे कैसे आधुनिक विज्ञान के प्रयोगों में कणाद के परमाणु वाद या भास्कर के बीजगणित का संदर्भ देकर छात्रों में अपनी विरासत के प्रति गर्व और वैज्ञानिक चेतना एक साथ जाग्रत करें।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सामाजिक गतिशीलता और समावेशिता

भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष इसकी 'समावेशिता' रही है, जिसे अक्सर आधुनिक काल में गलत समझा गया। प्राचीन भारत में ज्ञान को किसी एक वर्ग की जागीर नहीं, बल्कि समाज के उत्थान का माध्यम माना गया। **"विद्या धनं सर्वधन प्रधानम्"** (विद्या रूपी धन सभी धनों में प्रधान है) का विचार यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा ही वह माध्यम है जो सामाजिक स्तरीकरण की बाधाओं को तोड़कर व्यक्ति को सम्मान दिलाती है।

क्रियान्वयन की चुनौतियाँ

किसी भी महान परिवर्तन के मार्ग में बाधाएं आना स्वाभाविक है। IKS के समावेश के साथ मुख्य चुनौती औपनिवेशिक मानसिकता का वह अवशेष है, जो पश्चिमी ज्ञान को ही एकमात्र 'वैज्ञानिक' मानता है। इसके अतिरिक्त, उपयुक्त पाठ्य-सामग्री का अभाव और इसे केवल 'पुरातनपंथी' विचार मान लेने का भ्रम भी एक बड़ी बाधा है। इन चुनौतियों का समाधान केवल नारों से नहीं, बल्कि **"तद विद्धि**

प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया" (ज्ञान को विनम्रता, जिज्ञासा और सेवा से प्राप्त करो) के भाव से शोध आधारित कार्य करने में निहित है। हमें प्राचीन सूत्रों को आधुनिक प्रयोगशालाओं में सिद्ध करना होगा और एक ऐसा अंतःविषय (Interdisciplinary) ढांचा तैयार करना होगा जहाँ संस्कृत के विद्वान और आधुनिक वैज्ञानिक मिलकर काम कर सकें।

वैश्विक संदर्भ और भारत का 'विश्व गुरु' स्वरूप

आज विश्व जिन संकटों से गुजर रहा है- चाहे वह मानसिक अशांति हो या युद्ध—उनका समाधान भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा में ही निहित है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए है। जैसा कि प्राचीन सूक्ति कहती है, **"स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते"** (राजा केवल अपने देश में पूजा जाता है, जबकि विद्वान की पूजा हर जगह होती है)। आज की वैश्विक 'नॉलेज इकोनॉमी' में भारत अपनी प्राचीन प्रज्ञा के माध्यम से 'योग', 'आयुर्वेद' और 'सतत जीवन शैली' के वैश्विक मानकों का नेतृत्व कर सकता है। यह भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के पद पर प्रतिष्ठित करने का अवसर है, जहाँ हम दुनिया को केवल तकनीक नहीं, बल्कि उसे बरतने की 'संस्कृति' भी सिखाएंगे।

निष्कर्ष

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

इस शोध पत्र का समग्र विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक शिक्षा में **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)** का समावेश केवल अतीत का पुनरुद्धार या पुरानी परंपराओं की ओर लौटना नहीं है, बल्कि यह एक उन्नत, संतुलित और भविष्योन्मुखी समाज की ओर 'महा-छलांग' लगाने के समान है। वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ, चाहे वे मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी हों या पर्यावरणीय संकट से, यह सिद्ध करती हैं कि केवल तकनीकी कौशल पर्याप्त नहीं है। हमें एक ऐसे शैक्षणिक प्रतिमान की आवश्यकता है जो प्राचीन प्रज्ञा (Wisdom) और आधुनिक विज्ञान के बीच एक जीवंत सेतु का निर्माण कर सके। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल मंत्र रहा है- **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** अर्थात् हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाना है। यह प्रकाश केवल सूचनाओं का नहीं, बल्कि विवेक का है। शोध का निष्कर्ष यह है कि जब हम पाठ्यक्रम में 'पंचकोश' जैसे सिद्धांतों और 'निष्काम कर्म' जैसे दर्शन को स्थान देते हैं, तो हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार करते हैं जिसका मस्तिष्क वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होता है, परंतु जिसका हृदय अपनी सांस्कृतिक जड़ों और नैतिक मूल्यों में गहराई तक समाहित होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य का पूर्ण रूपांतरण है। यदि हम इस एकीकरण में सफल होते हैं, तो भारत एक ऐसी 'ज्ञान-क्रांति' का नेतृत्व करेगा जहाँ भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक शांति साथ-साथ चलेंगी। यह समन्वय न केवल भारत को पुनः **'विश्व गुरु'** के रूप में स्थापित करेगा, बल्कि मानवता को एक ऐसा मार्ग दिखाएगा जहाँ

विज्ञान का उपयोग विनाश के लिए नहीं, बल्कि **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** के वैश्विक कल्याण हेतु होगा। यही आधुनिक भारत की वास्तविक और सार्थक उपलब्धि होगी।

संदर्भ सूची

1. अरबिंदो, श्री. (1956). *नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन.* श्री अरबिंदो आश्रम ट्रस्ट।
2. अलतेकर, ए. एस. (1944). *प्राचीन भारत में शिक्षा.* नंद किशोर एंड ब्रदर्स।
3. उपासना, एस. एन. (2010). *गीता माधुर्य: श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षणिक मनोविज्ञान.* योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट।
4. कपूर, एस. सी. (2019). *प्राचीन भारतीय विज्ञान और आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता.* डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।
5. कुमारस्वामी, ए. के. (1943). *भारत में शिक्षा.* हिस्टोरिकल सोसाइटी ऑफ पेंसिल्वेनिया।
6. टैगोर, रवींद्रनाथ. (1917). *मेरा विद्यालय (My School).* मैकमिलन एंड कंपनी।
7. फ्रोली, डेविड. (2001). *वेदांतिक ध्यान: चेतना की मशाल.* नॉर्थ अटलांटिक बुक्स।
8. भाबुक, डी. पी. एस. (2011). *अध्यात्म और भारतीय मनोविज्ञान: भगवद्गीता से सीख.* स्प्रिंगर साइंस।
9. महादेवन, बी., भट्ट, वी. आर., एवं नागेंद्र, पी. (2022). *भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय: अवधारणाएं और अनुप्रयोग.* पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
10. मुखर्जी, आर. के. (1947). *प्राचीन भारतीय शिक्षा: ब्राह्मणवादी और बौद्ध.* मोतीलाल बनारसीदास।
11. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (1953). *प्रमुख उपनिषद.* जॉर्ज एलेन एंड अनविन लिमिटेड।
12. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2022). *उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश.* भारत सरकार।
13. विवेकानंद, स्वामी. (1912). *शिक्षा: उनके भाषणों और लेखों का संकलन.* अद्वैत आश्रम।
14. शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार।
15. एन.सी.ई.आर.टी. (NCERT). (2023). *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL